



Gopthri

26 Jul 2021

02:02 PM

Pune

Model: Web-MyKundli

Order No: 121228401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 26/07/2021
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 14:02:00 घंटे
इष्ट _____: 19:40:30 घटी
स्थान _____: Pune
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:34:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:34:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:27:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:33 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:44:55 घंटे
सूर्योदय _____: 06:09:48 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:11:08 घंटे
दिनमान _____: 13:01:21 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 09:25:47 कर्क
लग्न के अंश _____: 28:05:37 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: शतभिषा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: सौभाग्य
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: गो-गौतमी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1943	श्रावण	4
पंजाबी	संवत : 2078	श्रावण	11
बंगाली	सन् : 1428	श्रावण	10
तमिल	संवत : 2078	आदी	11
केरल	कोल्लम : 1196	कर्कदम	10
नेपाली	संवत : 2078	श्रावण	11
चैत्रादि	संवत : 2078	श्रावण	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2078	आषाढ	कृष्ण 3

पंचांग

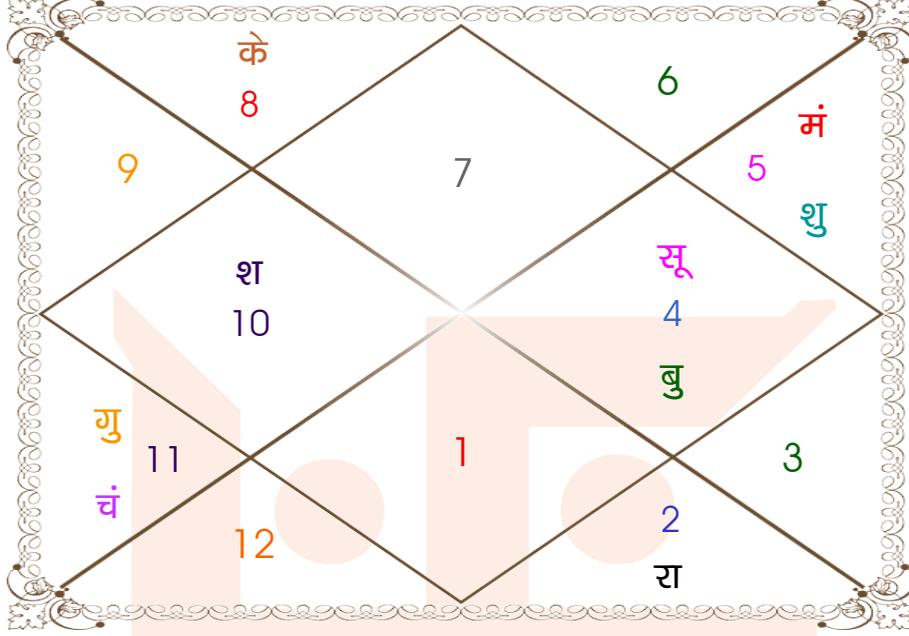
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 26:54:44
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : धनिष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 10:26:08 घंटे
जन्म योग _____ : शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सौभाग्य
योग समाप्ति काल _____ : 22:39:00 घंटे
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 15:24:21 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 08:59:41
भभोग _____ : 59:28:45
भोग्य दशा काल _____ : राहु 15 वर्ष 2 मा 28 दि

घात चक्र

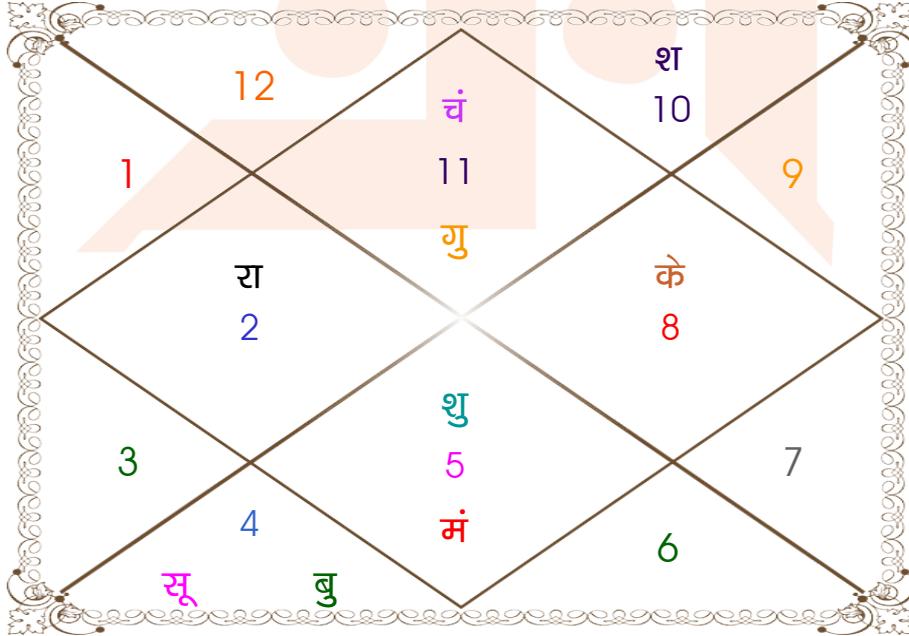
मास _____ : चैत्र
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : आर्द्रा
योग _____ : गण्ड
करण _____ : किंस्तुघ्न
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : मिथुन
सूर्य _____ : वृष
चन्द्र _____ : मिथुन
मंगल _____ : मिथुन
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कर्क
शुक्र _____ : सिंह
शनि _____ : मेष
राहु _____ : कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		रा	
गु चं			बु सू
श			शु मं
	के	ल	

लग्न कुंडली

रा		गु चं
बु सू		श
मं शु	ल	के

विंशोत्तरी
राहु 15वर्ष 2मा 28दि
राहु
26/07/2021
25/10/2138

राहु	23/10/2036
गुरु	23/10/2052
शनि	24/10/2071
बुध	23/10/2088
केतु	24/10/2095
शुक्र	25/10/2115
सूर्य	24/10/2121
चन्द्र	25/10/2131
मंगल	25/10/2138

योगिनी
धान्या 2वर्ष 6मा 14दि
भामरी
09/02/2024
09/02/2028

भामरी	20/07/2024
भद्रिका	08/02/2025
उल्का	10/10/2025
सिद्धा	21/07/2026
संकटा	11/06/2027
मंगला	21/07/2027
पिंगला	10/10/2027
धान्या	09/02/2028

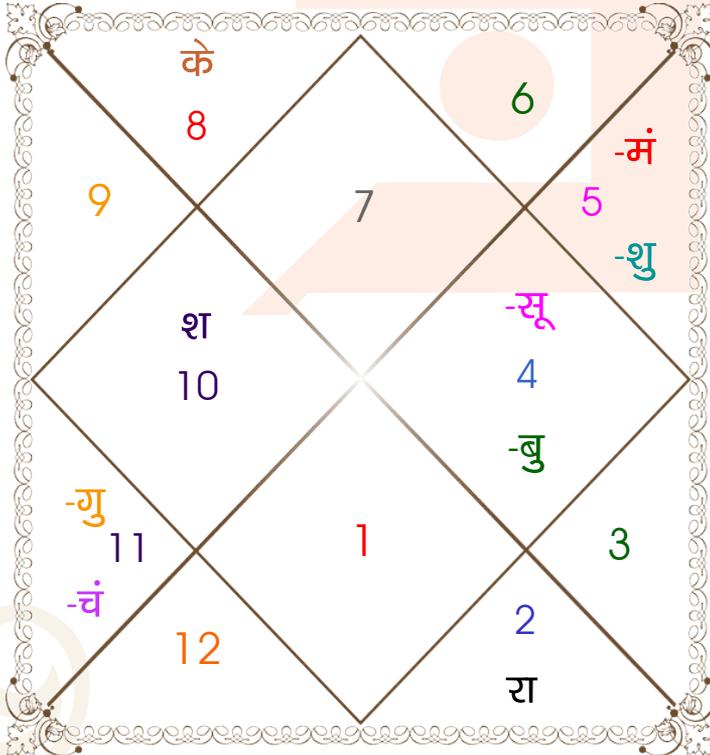
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	28:05:37	323:51:44	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	---
सूर्य			कर्क	09:25:47	00:57:18	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			कुंभ	08:42:29	13:35:15	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
मंगल			सिंह	03:39:06	00:37:35	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	मित्र राशि
बुध	अ		कर्क	02:17:12	02:05:32	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	शत्रु राशि
गुरु	व		कुंभ	06:04:29	00:06:11	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	सम राशि
शुक्र			सिंह	11:02:24	01:11:53	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
शनि	व		मक	16:32:30	00:04:24	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	स्वराशि
राहु	व		वृष	15:07:51	00:08:36	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	15:07:51	00:08:36	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	मित्र राशि
हर्ष			मेष	20:23:16	00:01:12	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	---
नेप	व		कुंभ	28:48:04	00:00:56	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	---
प्लूटो	व		मक	01:12:17	00:01:25	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
दशम भाव			कर्क	29:45:21	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	शनि	--

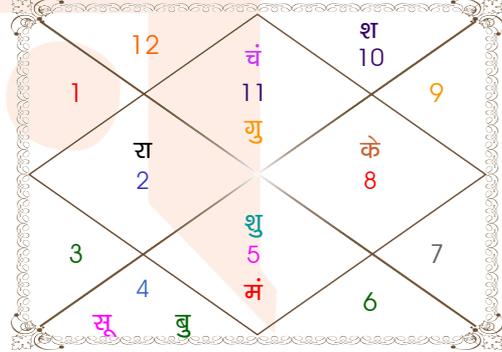
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:09:16

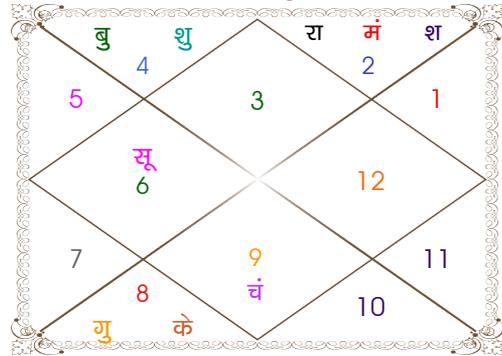
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 13:22:14	तुला 28:05:37
2	वृश्चिक 13:22:14	वृश्चिक 28:38:52
3	धनु 13:55:29	धनु 29:12:06
4	मकर 14:28:44	मकर 29:45:21
5	कुम्भ 14:28:44	कुम्भ 29:12:06
6	मीन 13:55:29	मीन 28:38:52
7	मेष 13:22:14	मेष 28:05:37
8	वृष 13:22:14	वृष 28:38:52
9	मिथुन 13:55:29	मिथुन 29:12:06
10	कर्क 14:28:44	कर्क 29:45:21
11	सिंह 14:28:44	सिंह 29:12:06
12	कन्या 13:55:29	कन्या 28:38:52

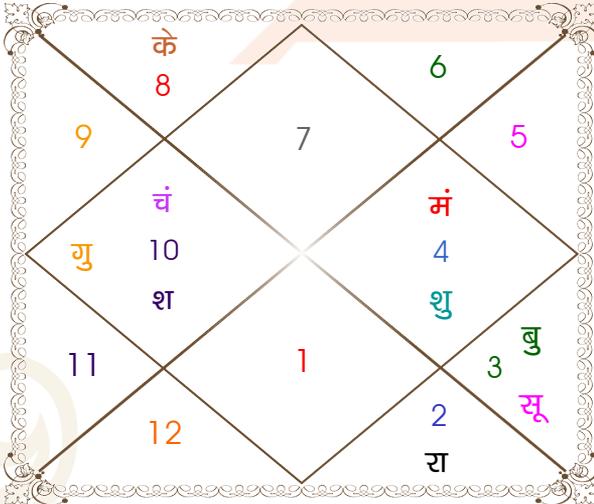
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	28:05:37
2	वृश्चिक	27:19:01
3	धनु	27:45:19
4	मकर	29:45:21
5	मीन	01:55:23
6	मेष	01:41:41
7	मेष	28:05:37
8	वृष	27:19:01
9	मिथुन	27:45:19
10	कर्क	29:45:21
11	कन्या	01:55:23
12	तुला	01:41:41

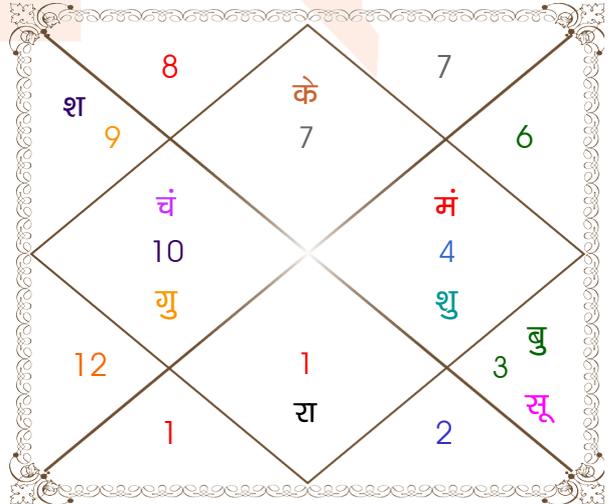
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 15 वर्ष 2 मास 28 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
26/07/2021	23/10/2036	23/10/2052	24/10/2071	23/10/2088
23/10/2036	23/10/2052	24/10/2071	23/10/2088	24/10/2095
26/07/2021	गुरु 11/12/2038	शनि 27/10/2055	बुध 21/03/2074	केतु 21/03/2089
गुरु 29/11/2023	शनि 24/06/2041	बुध 06/07/2058	केतु 19/03/2075	शुक्र 21/05/2090
शनि 05/10/2026	बुध 29/09/2043	केतु 15/08/2059	शुक्र 17/01/2078	सूर्य 26/09/2090
बुध 24/04/2029	केतु 04/09/2044	शुक्र 14/10/2062	सूर्य 23/11/2078	चंद्र 27/04/2091
केतु 12/05/2030	शुक्र 06/05/2047	सूर्य 26/09/2063	चंद्र 23/04/2080	मंगल 23/09/2091
शुक्र 12/05/2033	सूर्य 23/02/2048	चंद्र 27/04/2065	मंगल 21/04/2081	राहु 11/10/2092
सूर्य 06/04/2034	चंद्र 24/06/2049	मंगल 06/06/2066	राहु 08/11/2083	गुरु 17/09/2093
चंद्र 06/10/2035	मंगल 30/05/2050	राहु 11/04/2069	गुरु 13/02/2086	शनि 27/10/2094
मंगल 23/10/2036	राहु 23/10/2052	गुरु 24/10/2071	शनि 23/10/2088	बुध 24/10/2095

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
24/10/2095	25/10/2115	24/10/2121	25/10/2131	25/10/2138
25/10/2115	24/10/2121	25/10/2131	25/10/2138	00/00/0000
शुक्र 22/02/2099	सूर्य 11/02/2116	चंद्र 25/08/2122	मंगल 22/03/2132	राहु 07/07/2141
सूर्य 23/02/2100	चंद्र 12/08/2116	मंगल 26/03/2123	राहु 09/04/2133	गुरु 27/07/2141
चंद्र 24/10/2101	मंगल 18/12/2116	राहु 24/09/2124	गुरु 16/03/2134	00/00/0000
मंगल 24/12/2102	राहु 12/11/2117	गुरु 24/01/2126	शनि 25/04/2135	00/00/0000
राहु 24/12/2105	गुरु 31/08/2118	शनि 25/08/2127	बुध 21/04/2136	00/00/0000
गुरु 24/08/2108	शनि 13/08/2119	बुध 23/01/2129	केतु 18/09/2136	00/00/0000
शनि 25/10/2111	बुध 18/06/2120	केतु 24/08/2129	शुक्र 18/11/2137	00/00/0000
बुध 25/08/2114	केतु 24/10/2120	शुक्र 25/04/2131	सूर्य 25/03/2138	00/00/0000
केतु 25/10/2115	शुक्र 24/10/2121	सूर्य 25/10/2131	चंद्र 25/10/2138	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 15 वर्ष 3 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि 29/11/2023 05/10/2026	राहु - बुध 05/10/2026 24/04/2029	राहु - केतु 24/04/2029 12/05/2030	राहु - शुक्र 12/05/2030 12/05/2033	राहु - सूर्य 12/05/2033 06/04/2034
शनि 12/05/2024 बुध 07/10/2024 केतु 06/12/2024 शुक्र 29/05/2025 सूर्य 20/07/2025 चंद्र 15/10/2025 मंगल 14/12/2025 राहु 19/05/2026 गुरु 05/10/2026	बुध 14/02/2027 केतु 10/04/2027 शुक्र 12/09/2027 सूर्य 28/10/2027 चंद्र 14/01/2028 मंगल 08/03/2028 राहु 26/07/2028 गुरु 27/11/2028 शनि 24/04/2029	केतु 16/05/2029 शुक्र 19/07/2029 सूर्य 07/08/2029 चंद्र 08/09/2029 मंगल 30/09/2029 राहु 27/11/2029 गुरु 17/01/2030 शनि 19/03/2030 बुध 12/05/2030	शुक्र 11/11/2030 सूर्य 05/01/2031 चंद्र 06/04/2031 मंगल 09/06/2031 राहु 20/11/2031 गुरु 14/04/2032 शनि 05/10/2032 बुध 09/03/2033 केतु 12/05/2033	सूर्य 28/05/2033 चंद्र 25/06/2033 मंगल 14/07/2033 राहु 01/09/2033 गुरु 15/10/2033 शनि 06/12/2033 बुध 22/01/2034 केतु 10/02/2034 शुक्र 06/04/2034
राहु - चंद्र 06/04/2034 06/10/2035	राहु - मंगल 06/10/2035 23/10/2036	गुरु - गुरु 23/10/2036 11/12/2038	गुरु - शनि 11/12/2038 24/06/2041	गुरु - बुध 24/06/2041 29/09/2043
चंद्र 21/05/2034 मंगल 22/06/2034 राहु 12/09/2034 गुरु 24/11/2034 शनि 19/02/2035 बुध 08/05/2035 केतु 09/06/2035 शुक्र 08/09/2035 सूर्य 06/10/2035	मंगल 28/10/2035 राहु 24/12/2035 गुरु 14/02/2036 शनि 14/04/2036 बुध 08/06/2036 केतु 30/06/2036 शुक्र 02/09/2036 सूर्य 21/09/2036 चंद्र 23/10/2036	गुरु 04/02/2037 शनि 07/06/2037 बुध 26/09/2037 केतु 10/11/2037 शुक्र 20/03/2038 सूर्य 28/04/2038 चंद्र 02/07/2038 मंगल 16/08/2038 राहु 11/12/2038	शनि 07/05/2039 बुध 15/09/2039 केतु 08/11/2039 शुक्र 10/04/2040 सूर्य 26/05/2040 चंद्र 11/08/2040 मंगल 04/10/2040 राहु 20/02/2041 गुरु 24/06/2041	बुध 19/10/2041 केतु 06/12/2041 शुक्र 23/04/2042 सूर्य 03/06/2042 चंद्र 11/08/2042 मंगल 29/09/2042 राहु 31/01/2043 गुरु 21/05/2043 शनि 29/09/2043
गुरु - केतु 29/09/2043 04/09/2044	गुरु - शुक्र 04/09/2044 06/05/2047	गुरु - सूर्य 06/05/2047 23/02/2048	गुरु - चंद्र 23/02/2048 24/06/2049	गुरु - मंगल 24/06/2049 30/05/2050
केतु 19/10/2043 शुक्र 15/12/2043 सूर्य 01/01/2044 चंद्र 30/01/2044 मंगल 18/02/2044 राहु 10/04/2044 गुरु 25/05/2044 शनि 18/07/2044 बुध 04/09/2044	शुक्र 14/02/2045 सूर्य 03/04/2045 चंद्र 24/06/2045 मंगल 19/08/2045 राहु 12/01/2046 गुरु 22/05/2046 शनि 24/10/2046 बुध 11/03/2047 केतु 06/05/2047	सूर्य 21/05/2047 चंद्र 14/06/2047 मंगल 01/07/2047 राहु 14/08/2047 गुरु 22/09/2047 शनि 07/11/2047 बुध 19/12/2047 केतु 05/01/2048 शुक्र 23/02/2048	चंद्र 03/04/2048 मंगल 02/05/2048 राहु 14/07/2048 गुरु 17/09/2048 शनि 03/12/2048 बुध 10/02/2049 केतु 10/03/2049 शुक्र 30/05/2049 सूर्य 24/06/2049	मंगल 13/07/2049 राहु 03/09/2049 गुरु 18/10/2049 शनि 11/12/2049 बुध 28/01/2050 केतु 17/02/2050 शुक्र 15/04/2050 सूर्य 02/05/2050 चंद्र 30/05/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

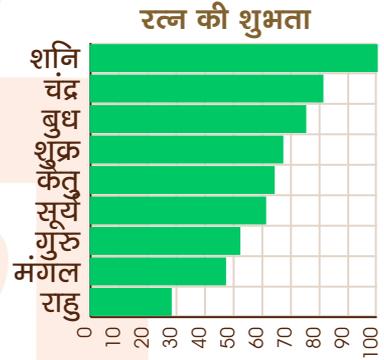
मूलांक	8
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	75%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	64%	धन, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	61%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पुखराज	गुरु	52%	सन्तति सुख, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
मूंगा	मंगल	47%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
गोमेद	राहु	28%	दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	23/10/2036	47%	69%	22%	75%	52%	73%	100%	52%	52%
गुरु	23/10/2052	67%	88%	55%	62%	64%	55%	100%	28%	64%
शनि	24/10/2071	47%	69%	22%	81%	52%	73%	100%	41%	52%
बुध	23/10/2088	67%	69%	47%	88%	52%	73%	100%	28%	64%
केतु	24/10/2095	47%	69%	55%	75%	52%	73%	89%	3%	77%
शुक्र	25/10/2115	47%	69%	47%	81%	52%	80%	100%	41%	70%
सूर्य	24/10/2121	73%	88%	55%	75%	58%	55%	89%	3%	52%
चंद्र	25/10/2131	67%	94%	47%	81%	52%	67%	100%	3%	52%
मंगल	25/10/2138	67%	88%	61%	62%	58%	67%	100%	3%	70%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/07/2021-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक कन्या है। चूंकि आपकी कुंडली में मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतएव इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में भी उग्रता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन ये अल्पकालिक रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप पित या गर्मी आदि से यदा कदा परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है लेकिन अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी तथा दाम्पत्य जीवन सामान्यतया संतोषप्रद रहेगा।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी भी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य क्षेत्र में परिश्रम तथा पराक्रम से सफलता अर्जित करेंगी। समाज से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति भी प्रभावित होगी परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव आपके पारिवारिक जीवन में नहीं होगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक खुशहाल एवं सुखी बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसके द्वारा आपका मंगली दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार दोष के भंग होने

पर आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी।



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(26/07/2021 - 23/10/2036)

राहु की महादशा 26/07/2021 को आरम्भ और 23/10/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, शत्रुओं पर विजय तथा स्वास्थ्य की मामूली समस्या हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको विरोधियों पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य, सेवा में लाभ, यश और ख्याति मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। किन्तु आपको सतर्क रहना चाहिए और किसी तरह की अति नहीं करनी चाहिए, अन्यथा आपको स्नायविक थकावट होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको चर्मरोग, पेट में अल्सर की समस्या, बुखार आदि हो सकते हैं। इनमें से अधिकांश से थोड़ी सी सतर्कता बरत कर बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको आपके जीवन साथी के साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपको पैतृक सम्पत्ति, ग्रैच्यूइटी, सेवा-निवृत्ति से लाभ आदि की प्राप्ति भी होगी। अप्रत्याशित अचानक लाभ भी हो सकता है। आपको सट्टे में भी लाभ हो सकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विमान विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, कम्प्यूटर विज्ञान, विमान-चालन, वायु-सैनिक, लेखन बीमा एजेन्ट आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, कागज, टेलीफोन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मियों, सहायकों और वरिष्ठ अधिकारियों का रुख आपके प्रति सख्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को समृद्धि तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके मित्र आपकी सहायता को तत्पर रहेंगे।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन में आराम मिलेगा। आपको अचानक धन, पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। वाहन से लाभ और आराम की संभावना है। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शोध-परियोजना की ओर आपका झुकाव होगा। विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य-लेखन आदि में आपकी रुचि होगी। बौद्धिक कार्यों से संबद्ध विषयों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और उन्हें लाभ तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपको साझेदार से लाभ मिल सकता है। आपकी माता को सट्टे में लाभ तथा सुख मिलेगा और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी जबकि आपके पिता को स्वास्थ्य की मामूली समस्या, यात्रा तथा अनावश्यक व्यय होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय और नौकरी में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों के जीवन में उन्नति, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लम्बी यात्रा होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपके जीवन में परिवर्तन, अचानक लाभ तथा स्वास्थ्य की मामूली समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा सन्तान-सुख की प्राप्ति, शिशु का जन्म और शिक्षा उत्तम होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान शिक्षा से सम्बद्ध कुछ समस्या, भवन-सुख तथा छोटी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ और विरोधियों पर विजय मिलेगी। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान विवाह, साझेदारी से लाभ तथा लम्बी यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में जीवन में प्रगति, यश, ख्याति और सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि जबकि मंगल की अन्तर्दशा में सफलता, सम्पत्ति, जीवन में उन्नति, यश और ख्याति मिलेगी।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि
(29/11/2023 - 05/10/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 26/07/2021 को प्रारंभ होकर 23/10/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 29/11/2023 को प्रारंभ होकर 05/10/2026 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ हो सकती है। इस अवधि में रिश्तेदार आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं, आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं, स्वयं को बीमार या अप्रसन्न महसूस कर सकते हैं। आलस्य की भावना रहेगी, क्रोध अधिक हो सकता है। वात और बलगम से संबंधित रोग हो सकता है। मन में नकारात्मक विचार आ सकते हैं। हर कदम पर सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(05/10/2026 - 24/04/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/07/2021 को प्रारंभ होकर 23/10/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/10/2026 को प्रारंभ होकर 24/04/2029 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान और सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों के विद्वान हो सकते हैं। स्पष्टवादी हो सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार, धर्म और अध्यात्म में सफल होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। नेत्र के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु
(24/04/2029 - 12/05/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/07/2021 को प्रारंभ होकर 23/10/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 24/04/2029 को प्रारंभ होकर 12/05/2030 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में चोरी, आग, मुकदमे, जुए आदि के कारण धन की हानि हो सकती है ; कर्ज चढ़ सकता है। आप चिंतित रह सकते हैं। अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। प्रत्येक कदम सावधानी से उठाना श्रेयस्कर रहेगा। स्वास्थ्य भी दुर्बल हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(12/05/2030 - 12/05/2033)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/07/2021 को प्रारंभ होकर 23/10/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 12/05/2030 को प्रारंभ होकर 12/05/2033 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके उत्तम मित्र होंगे, सामाजिक जीवन सफल रहेगा, उच्चपद पर आसीन होंगे, धनी बनेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। बहुत सी यात्राएं करेंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से मित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60000 जाप करें।